>

Title: Problems being faced by the family of National Poet Ramdhari Singh 'Dinkar'.

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): उपाध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बात राष्ट्रकवि डॉ. रामधारी सिंह दिनकर की कविता की पंक्तियों से शुरु करना चाहता हूं।

,

जय हो, जग में जले जहां भी नमन पुनीत अनल को,

जिस नर में भी बसे जहां भी नमन तेज को बल को,

जाति-जाति रटते जिनकी पूंजी केवल पाखंड,

जाति पूछना है तो देखो मेरा यह भुजदंड,

वसुधा का नेता कौन हुआ, भूखंड विजेता कौन हुआ,

जिसने न कभी आराम किया,िवघ्नों में रहकर नाम किया,

सूरमा नहीं विचलित होते, क्षण एक नहीं धीरज खोते,

कांटों में राह बनाते हैं, कष्टों को गले लगाते हैं,

नींद कहां उनकी आंखों में, जो धुन के मतवाले हैं,

गति की तृष्णा और बढ़ती, जब पड़ते पग में छाले हैं,

समर शेष है, समय शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्यास,

जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी अपराध।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं राष्ट्रकवि दिनकर की कविता की पंक्तियां क्यों बोल रहा हूं?

राष्ट्रकवि दिनकर का मकान पटना में है और उस मकान पर सत्तारूढ़ दल के उप-मुख्यमंत्री के भाई ने अपना कब्जा किया हुआ है।

उनके परिवार के सदस्यों, उनकी मां, उनकी पतोहू, उनके प्रपोत्र की पीड़ा राष्ट्रकवि दिनकर के पास पहुंच रही है।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य, यह राज्य का मामला है, केंद्र सरकार इसमें क्या करेगी?

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : महोदय, वे पंडित जवाहर लाल नेहरू जी के समय में राज्य सभा के सदस्य रह चुके हैं। हिन्दी देश के हिन्दी साहित्यकार, जितने भी हिन्दी सेवी हैं, सब लोगों ने वहां की सरकार के खिलाफ निन्दा प्रस्ताव पारित किया है। वे दर-दर भटक रहे हैं। मुख्यमंत्री जी के यहां गये, उपमुख्यमंत्री के यहां गये, यहां आकर भाजपा के जितने भी नेता हैं, श्रीमती सुषमा स्वराज, श्री लालकृष्ण आडवाणी, श्री राजनाथ सिंह सबके पास गये।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आपकी बात पूरी हो गयी है।

â€¦(व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : महोदय, हमारी बात सुन ली जाये। जिसने राष्ट्र की सेवा की, हिन्दी साहित्य, हिन्दी जगत की सेवा की।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आपने अपनी पीड़ा बता दी है।

â€¦(व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : उनके परिवार की यह दुर्दशा है, उनका परिवार दर-दर भटक रहा है। तमाम मीडिया ने लिखा कि दिनकर का मकान, मोदी की दुकान, दिनकर का मकान, मोदी की दुकान।

महोदय, मकान पर कब्जा किया हुआ है।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आपकी बात हो गयी है।

â€¦(व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : महोदय, हमारी बात सुनी ली जाये। यह राष्ट्रकवि दिनकर के परिवार की दुर्दशा का सवाल है। हिन्दी साहित्य जगत की जिसने आजीवन सेवा की।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आपने अपनी बात रख दी है और सरकार ने आपकी बात सुन ली है।

â€¦(व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : वे पंडित जवाहर लाल नेहरू जी के समय में राज्य सभा के सदस्य थे।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : इस बात को बार-बार दोहराने से कोई फायदा नहीं है।

â€¦(व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : जिन्होंने संस्कृति के चार अध्याय, इतिहास को, हिन्दुस्तान को गौरवान्वित करने का काम किया, उनका परिवार दर-दर भटक रहा है। प्रधानमंत्री जी को लिखा गया है, महामहिम राष्ट्रपति जी के यहां हिन्दी के सभी साहित्यकारों ने लिखा-पढ़ी की है।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य आप बैठ जाइये। आपने अपनी बात रख दी है और सरकार ने आपकी बात सुन ली है। अब सरकार अपना काम करेगी।

â€¦(व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : उनकी पीड़ा सुनने वाला कोई नहीं है। यह बहुत भारी जुल्म है। यहां राजघाट की समाधि पर हिन्दी के साहित्यकारों ने.....(व्यवधान) मैं समाप्त कर रहा हूं।...(व्यवधान)

श्री रेवती रमण सिंह : महोदय, मैं अपने आपको इनसे एसोसिएट करता हूं।...(व्यवधान)

श्री मंगनी लाल मंडल (झंझारपुर): महोदय, रघुवंश बाबू ने जो बातें कही हैं।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : आप एसोसिएट कर दीजिए।

श्री मंगनी लाल मंडल : उनके बाद हमें बोलने दें।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : अगर एक ही विषय पर 10 माननीय सदस्य बोलेंगे तो ऐसे तो काम नहीं चलेगा।

श्री मंगनी लाल मंडल : महोदय, रघुवंश बाबू ने कुछ आरोप लगाये हैं। उन आरोपों के बारे में मैं नहीं जानता हूं, लेकिन चूंकि भारत सरकार ने दिनकर जी को राष्ट्रकवि की उपाधि दी थी और जवाहर लाल नेहरू जी ने बहुत सम्मान दिया था तो किसने मकान पर कब्जा किया, किसने नहीं किया, इससे मुझे कोई मतलब नहीं है। मतलब यह है कि राष्ट्रकवि दिनकर जी के मकान पर अगर अनाधिकृत रूप से किसी ने कब्जा कर लिया है तो उसे मुक्त कराने के लिए यहां से सरकार को कोई कार्रवाई करनी चाहिए। बिहार सरकार स्वयं संवेदनशील है।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : श्री वीरेन्द्र कुमार जी, आप बोलिये।

â€¦(व्यवधान)

श्री पवन कुमार बंसल: महोदय, सभी माननीय सदस्स इस बात से वाकिफ़ हैं कि ज़ीरो आवर की सीमाएँ क्या हैं। एक अहम विषय उन्होंने ज़रूर उठाया है लेकिन माननीय श्री रघुवंश प्रसाद जी यह खुद जानते हैं और वे खुद कह रहे हैं कि यह विषय वहाँ के प्रांत से ताल्लुक रखता है। दिनकर जी राष्ट्रकवि हैं, हम सभी को उनकी इज्ज़त करनी चाहिए और हम करते हैं। लेकिन केन्द्र सरकार अपने आप इसमें कोई कार्रवाई नहीं कर सकता, यह बात मैं बहुत अदब के साथ कहना चाहता हूँ। यहाँ सभी पार्टियों के सदस्य बैठे हैं। कोई भी बात यहाँ कहते हैं तो आवश्यक तौर पर उसकी सूचना सबको पहुँचती है। यही तो उसकी खूबी है और इसी कारण तो आप यह सब कह रहे हैं। लेकिन इसको आप केन्द्र सरकार का दायित्व बनाकर नहीं कह सकते कि केन्द्र सरकार इसका संज्ञान ले और कुछ करे। ...(व्यवधान)

श्री शैलेन्द्र कुमार : आप केन्द्र सरकार को निर्देशित करें। ...(व्यवधान)

श्री पवन कुमार बंसल : मैं इस बात से मामूली सा ताज्जुब ज़रूर करता हूँ कि कई चीज़ों पर माननीय सदस्य जब कहते हैं, जैसे शैलेन्द्र कुमार जी कह रहे हैं, माननीय सदस्य भी कई बार कहते हैं कि इसमें केन्द्र उनको आदेश दे। क्या आप यह अधिकार केन्द्र को देना चाहते हैं या दे रहे हैं? ...(व्यवधान)

श्री शैलेन्द्र कुमार : आप उनको एडवाइस करें। ...(व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : राज्य सरकार से पूछा जाए कि उनके परिवार की यह दुर्दशा क्यों है। ...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : वीरेन्द्र कुमार जी, आप जल्दी अपनी बात कहें।

श्री पवन कुमार बंसल : महोदय, मैं फिर अदब के साथ कहना चाहता हूँ कि माननीय सदस्य वे बातें *इन्फर* कर रहे हैं जो मैंने नहीं कही हैं। ...(व्यवधान) अलग अलग राज्यों में उनकी सरकारें रही हैं। इनके द्वारा शासित कहीं किसी और राज्य में यह बात उठती तो क्या वह यह अधिकार केन्द्र सरकार को देते कि केन्द्र सरकार वहाँ आदेश दे सकती है? ...(व्यवधान)

श्री शैलेन्द्र कुमार : आदेश नहीं, आप रिपोर्ट मँगवा लीजिए।

श्री पवन कुमार बंसल : आप रिपोर्ट मँगवाकर क्या करेंगे? ...(व्यवधान) महोदय, रघुवंश प्रसाद जी जो कह रहे हैं, उस पर झुकते हुए मैं यह कह सकता हूँ कि इस विषय की सूचना मैं संबंधित मंत्रालय में भेज दूँगा।

...(व्यवधान) मैं इसे सूचना हेतु संबंधित मंत्रालय में भेज दूँगा।